3. मानव विकास का उपागमों को लिखें।

Ans→ मानव विकास के उपागमों को मुख्यता चार भागों में बाँटा गया है –

i) आय उपागम
ii) कल्याण उपागम
iii) आधारभूत आवश्यकता उपागम
iv) क्षमता उपागम

i) आय उपागम :– इस उपागम मे मानव विकास को आय के साथ जोड़कर देखा जाता है इसमें आय का स्तर ऊँचा होने पर मानव विकास का स्तर भी ऊँचा होता है।

ii) कल्याण उपागम :– इस उपागम में शिक्षा, स्वास्थ्य सामाजिक सुरक्षा और सुख-साधनों पर अधिक जोर दिया जाता है इस उपागम में मानव के कल्याण पर विचार किया जाता

iii) आधारभूत आवश्यकता उपागम :– हम सभी जानते कि मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताएँ होती है, जैसे :– स्वास्थ्य, भोजन जलापूर्ति, स्वच्छता तथा आवास इ इस उपागम मे मनुष्य कि इन्ही आवश्यकताओं के बारे में विचार विमर्श किया जाता है।

iv) क्षमता उपागम :– इस उपागम में हम यह देखते है मानव अपने संसाधनों तक पहुँच पाता है या नहीं।

Scanned with CamScanner

iii) संसाधनों तक पहुँच :- संसाधनों तक पहुँच से तात्पर्य अच्छे ढंग से जीवन जीने हेतु साधनों की प्राप्ति से है। इसे राष्ट्रीय आय या प्रति व्यक्ति आय के रूप में नापा जाता है, सामान्यतः न्यूनतम 100 अमेरिकी डॉलर से 40,000 अमेरिकी डॉलर के उच्चतम स्तर तक आय का वितरण देखा जाता है।

5. ~~उच्च~~ ~~UD~~ UNDP का पूर्ण रूप से ~~लिखो~~ नाम लिखे

Ans) (United Nation Develokment progream.)
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

6. उच्च सुचकांक मूल्य वाले देश, माध्यम सुचकांक मूल्य वाले देश ; निम्न सुचकांक मूल्य वाले देश? को विस्तार पूर्वक लिखें ?

उच्च सुचकांक मूल्य वाले देश :- इनमें मानव विकास सुचकांक का स्कोर 0.798 से 0.702 तक पाया जाता है। इसमें मॉरीशस, मालद्वीप, श्रीलंका और चीन शामिल है। यह उच्च मानवीय विकास समूह के देश हैं। इसमें अधिकतर ऐसे देश हैं जिनका विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ है। इनमें कुछ देश ऐसे हैं, जो उपनिवेश रह चुके हैं तथा कुछ देश रूस के विघटन के बाद बने हैं।

माध्यम मानव विकास सुचकांक वाले देश :- इसमें वे देश सम्मिलित हैं, जिनका विकास सुचकांक 0.698 से 0.555 है। इनकी संख्या 38 है।

Scanned with CamScanner

उपलब्ध पर्यावरणीय, वित्तीय तथा मानवीय संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से इस प्रकार किया जाये जिससे इन संसाधनों की उपलब्धता समान रूप से आगे आने वाली पीढ़िया
उपलब्ध समस्त संसाधनों की वहाँ निवासित प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से उपलब्धता को समता कहा जा सकता है।

ii) सतत् पोषणीयता :- इसके अंतर्गत यह माना है कि किसी क्षेत्र में उपलब्ध पर्यावरणीय वित्तीय तथा मानवीय संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से इस प्रकार किया जाये जिससे इन संसाधनों की उपलब्धता समान रूप से आगे आने वाली पीढ़ियों को हो सके।

iii. उत्पादकता :- मानव श्रम उत्पादक था मानव कार्यों के संदर्भ में उत्पादकता। इसके लिये यह आवश्यक है कि मानवीय समुदाय में साक्षरता को बढ़ाने तथा उत्तम चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध करायी कराई जाये जिससे उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाकर उत्पादकता में निरन्तर वृद्धि की जा सकती है।

iv) सशक्तीकरण :- अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करने की क्रिया को सशक्तिकरण कहते हैं। इस संदर्भ में देश में निवासित सामाजिक - आर्थिक दृष्टि से पिछड़े मानवीय समूहों के सशक्तीकरण का विशेष महत्व है।